This question paper contains **3** printed pages]

Roll No. | | | | | | | | | | |

S. No. of Question Paper : **8620**

Unique Paper Code : **2052101203**

Name of the Paper : **हिंदी निबंध एवं अन्य गद्य विधाएँ**

Name of the Course : **ITEP**

Semester : **II**

Duration : **3 Hours** Maximum Marks : **90**

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।)

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 2×10=20

(क) साधु ने समझाया, "महाराज, भ्रष्टाचार और सदाचार मनुष्य की आत्मा में होता है; बाहर से नहीं होता। विधाता जब मनुष्य को बनाता है तब किसी की आत्मा में ईमान की अकल फिट कर देता है और किसी की आत्मा में बेईमानी की। इस कल में से ईमान या बेईमानी के स्वर निकलते हैं, इन्हें दबाकर ईमान के स्वर कैसे निकाले जाएँ ? मैं कई वर्षों से इसी के चिंतन में लगा हूँ।"

अथवा

दूसरों के, विशेषतया अपने परिचितों के, थोड़े क्लेश या शोक पर जो वेगरहित दु:ख होता है, उसे सहानुभूति कहते हैं। शिष्टाचार में इस शब्द का प्रयोग इतना अधिक होने लगा है कि यह निकम्मा सा हो गया है। अब प्राय: इस शब्द से हृदय का कोई सच्चा भाव नहीं। सहानुभूति के तार, सहानुभूति की चिट्ठियाँ लोग यों ही भेजा करते हैं। यह छद्म शिष्टता मनुष्य के व्यवहार क्षेत्र से सच्चाई के अंश को क्रमश: चरती जा रही है।

P.T.O.

(ख) जैसे अपने जड़ तन से निकल कर तदात्म मन कहीं घोर निभूत में विभोर हो रहा हो, चेहरे पर तनाव नहीं, रम्य रेखाओं में सलवटें नहीं, असंभव की संभावनाओं से उदासीन, आत्मानुशासित दृष्टि का सृष्टि चेतन प्रसार। मैं छेड़ता न था कि उस एकात्मय चंद्र पर बादल न रुके, कुमुद न कुम्हलाए, तनिक पड़े स्वस्थ जल घायल न हो।

अथवा

प्रेम की भाषा शब्द-रहित है। नेत्रों की, कपोलों की, मस्तक की भाषा भी शब्द-रहित है। जीवन का तत्व भी शब्द से परे है। सच्चा आचरण-प्रभाव, शील, अचल स्थित संयुक्त आचरण न तो साहित्य के लंबे व्याख्यानों से गठा जा सकता है; न वेद की श्रुतियों के मीठे उपदेश से; न अंजील से; न कुरान से; न धर्मचर्चा से; न केवल सत्संग से; जीवन के अरण्य में धंसे हुए पुरुष के हृदय पर प्रकृति और मनुष्य के जीवन के मौन व्याख्यानों के यत्न से, सुनार के छोटे हथौड़े की मंद-मंद चोटों की तरह आचरण का रूप प्रत्यक्ष होता है।

2. निराला की साहित्य साधना में संकलित 'नये संघर्ष' का सार अपने शब्दों में लिखिए। 15

अथवा

'जातियों का अनुठापन' निबंध का उद्देश्य क्या है ? विस्तार से लिखिए।

3. भारतवर्ष की सांस्कृतिक समस्या का प्रंतिपाद्य लिखिए। 15

अथवा

'सदाचार का ताबीज' में निहित व्यंग्य का उद्घाटन कीजिए।

4. 'आचरण की सभ्यता' का मूल संदेश क्या है ? अपने शब्दों में लिखिए। 15

अथवा

'करुणा' निबंध के आधार पर आचार्य रामचंद्र शुक्ल की निबंध शैली का विवेचन कीजिए।

5. संस्मरण की विशेषताओं के आधार पर 'अज्ञेय के साथ' की समीक्षा कीजिए। 15

अथवा

संस्मरण 'जातियों का अनूठापन' निबंध की तात्विक समीक्षा कीजिए।

6. किसी **एक** पर टिप्पणी लिखिए : 10

(क) 'सदाचार का ताबीज' की भाषा-शैली।

(ख) 'अथातो घुमक्कड़ जिज्ञासा' यात्रा-वृत्तांत का सार लिखिए।